भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

① संज्ञानात्मक (ज्ञानात्मक) ⇒

ज्ञान, अवबोध, प्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन

② भावनात्मक पक्ष ⇒ चरित्र निर्माण, व्यवस्थापन, अनुशासन, आदरण
↳ भाव से भरा हुआ या हृदय को प्रभावित करने वाला

③ क्रियात्मक पक्ष ⇒ शारीरिक, गति, व्यवहार, वाणी, शोध

④ कौशलात्मक पक्ष ⇒ पढ़ना, लिखना, बोलना, सुनना

⑤ सृजनात्मक पक्ष ⇒ निर्माण, सृजन, साहित्य

⑥ कल्पनात्मक उद्देश्य ⇒ मानसिक विकास, संरक्षण क्षमता।

① संज्ञानात्मक या ज्ञानात्मक उद्देश्य ⇒ • इससे छात्रों में मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा व्यवहार परिवर्तन किये जाते हैं। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विभिन्न विषयों के माध्यम से ज्ञानात्मक पक्ष का विकास करने का प्रयास किया जाता है।

– ज्ञानात्मक उद्देश्यों के माध्यम से निम्नलिखित ज्ञान का अवबोध होते हैं:-

a. ज्ञान – इसके तहत छात्रों में शब्दों, तथ्यों, नियमों, सूचनाओं व सिद्धांतों की सहायता से उनके ज्ञान को विकसित किया जाता है। उनके ज्ञान को विकसित करने के लिए सिद्धांतों, नियमों, मानदण्डों एवं वर्गीकरण का स्मरण एवं पहचान कराने के लिए आवश्यक परिस्थितियों की पहचान एवं निर्माण किया जाता है। उन्हें पाठ्यवस्तु से संबंधित विशिष्ट ज्ञान दिया जाता है।

b. बोध – बोध के अन्तर्गत भी ज्ञान निहित होता है। बोध से तात्पर्य है, नवीन ज्ञान का विद्यार्थियों की समझ में आना इस क्रिया के दौरान शिक्षक अपने अनुभवों का प्रयोग ज्यादा-से-ज्यादा करते हैं।

c. प्रयोग d. विश्लेषण ⇒ विभक्त या खण्ड-खण्ड करना e. संश्लेषण ⇒ इसका अर्थ इकट्ठा या निर्माण करना।

② ~~कल्पना~~ कल्पनात्मक उद्देश्य ⇒ • छात्रों की मानसिक विकास करना एवं कल्पना करना

भाषा के विविध रूप

(1) मातृभाषा ⇒ • भाषा का पहला रूप मातृभाषा कहलाती है। जिसका अर्थ है - माँ से ग्रहण की हुई भाषा

• माँ की संकल्पना भारतीय संस्कृति में विशाल रूप में देखी जाती है।

• 'जननी जन्मभूमिश्च' का संबोधन माँ के लिए ही किया जाता है। अर्थात जन्मभूमि से ग्रहण की गई भाषा मातृभाषा कहलाती है।

• वैलार्ड ⇒ घर की बोली को माता की भाषा और समाज द्वारा स्वीकृत भाषा को मातृभाषा कहा है।

• महात्मा गांधी ⇒ सन् 1917 में मातृभाषा के अनादर का विरोध करते हुए कहा कि, "माँ के दूध के साथ जो संस्कार और मीठे शब्द मिलते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो संबंध होना चाहिए वह विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देने में टूट जाता है।

• आदर्श परिभाषा ⇒ मातृभाषा वह परीनिहित भाषा है जोकि क्षेत्र विशेष में समाज द्वारा स्वीकृत और दिन - प्रतिदिन के सामाजिक कार्यों को सुगमता से संपन्न करने में सहायक है।

• रायबर्न ⇒ मातृभाषा हर्ष, आनंद और ज्ञान का लक्षण साधन स्त्रोत है भावों एवं अभिलाषाओं का परिचालक है, तथा सृजनात्मक शक्तियों का साधन है।

(2) राष्ट्रभाषा ⇒ • जो ~~भाषा~~ भाषा पूरे देश में बोली जाती है एवं राजकाज के सभी कार्यों में एक रूप से प्रयोग की जाती है वह राष्ट्रभाषा कहलाती है।

• भारत के संदर्भ में हम किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दे सकते।

• संसार के बहुत-से ऐसे देश हैं जहाँ एक ही भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। वहाँ की जनता की मातृभाषा एक ही होती है। साथ ही उसी भाषा को उस देश की राष्ट्रभाषा भी कहा जाता है।

• परन्तु भारत जैसे देश में जो कि एक बहुभाषी देश है वहाँ यह आवश्यक नहीं है कि पूरे देश की जनता एक ही भाषा में वैचारिक विनिमय करें।

• भारत के संविधान में भी हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया है न कि राष्ट्रभाषा का।

• स्वतंत्रता से पूर्व भी भारत की राष्ट्रभाषा सही माने में हिन्दी थी।

• हमारे राष्ट्र ~~के~~ भारत के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दिन था - 14 सितम्बर, 1949 ई इस दिन भारतीय संविधान सभा ने सर्वसम्मति से स्वतंत्र भारत गणतन्त्र-संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकारा गया।

(3) प्रादेशिक अथवा क्षेत्रीय भाषा ⇒ • भारत में बोलियाँ अनेक हैं, किन्तु क्षेत्रीय भाषाएँ बारह हैं। भारतीय संविधान की 8 वीं अनुसूची में असमिया बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी संस्कृत, तमिल, तेलुगु और उर्दू हैं।
• यह भाषा मातृभाषा का ही रूप है।

(4) राजभाषा ⇒ संविधान के अनुच्छेद 343 (खण्ड 1) में संघ की भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है।

(5) सांस्कृतिक भाषा ⇒ • सांस्कृतिक भाषा का तात्पर्य यह है कि जिसमें किसी देश की संस्कृति विद्यमान रहती है उसे प्राचीन भाषा भी कहा जाता है।
• भारत की संस्कृति भाषाएँ संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश हैं।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय भाषा ⇒ • अन्तर्राष्ट्रीय भाषा उस भाषा को कहा जाता है, जब किसी राष्ट्र की भाषा अन्य राष्ट्रों में भी लोकप्रिय तथा प्रचलित हो जाए और उसका प्रयोग दूसरे राष्ट्र अपने विचार एवं भावों के विनिमय के लिए करने लगें।
• अँग्रेजी एक ऐसी भाषा है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का गौरव प्राप्त है।
• विश्व के राष्ट्रों से सम्पर्क व आदान-प्रदान करने के एक ऐसी भाषा की आवश्यकता पड़ती है जिसको व्यक्ति आपस में आसानी से समझ सके।

(7) बोलियाँ (Dialect) — • बोली की भाषा का पूर्ण दर्जा नहीं दिया जा सकता है, एक भाषा के अन्तर्गत जब अनेक अलग-2 रूप विकसित हो जाते हैं तो उन्हें बोलियाँ कहते हैं।
• वास्तव में बोली भाषा का वह रूप होता है जो एक सीमित क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों के द्वारा मौखिक रूप में प्रयोग किया जाता है।